P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-III* November-2015

मानक हिन्दी भाषा : स्वरूप और प्रयोग

घनश्याम भारती
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गढ़ाकोटा (सागर) म.प्र.

सारांश

मानक हिन्दी भाषा हिन्दी का वह रूप है जो सर्वमान्य, सर्वप्रतिष्ठित तथा व्याकरणिक दृष्टि के शुद्ध है। देश में हिन्दी की कई बोलियाँ प्रचलित हैं, बोलचाल की क्षेत्रीय भाषायें भी विविध प्रकार की हैं। अवधी, बघेली, छत्तोसगढ़ी, बुन्देली, ब्रज, खड़ी बोली, कन्नौजी, हरियाणी, राजस्थानी, पहाड़ी, भोजपुरी, मगही, मैथिली आदि हिन्दी भाषा की ही बोलियाँ हैं। इन सभी बोलियों में हिन्दी का शुद्धतम रूप किसे माना जाय ? यह एक विचारणीय प्रश्न है। अतः मानक हिन्दी भाषा, हिन्दी की सभी बोलियों का परिनिष्ठित, शुद्धतम रूप है। मानक हिन्दी भाषा के स्वरूप तथा प्रयोग को प्रस्तुत शोधालेख में दिखाने का प्रयास किया गया है। आज भी देश में आम जन तथा विद्वानों के द्वारा हिन्दी के गलत (अमानक) शब्दों का प्रयोग फैशन बन गया है, आवश्यकता है हिन्दी के शुद्ध रूप जानने की, शुद्ध हिन्दी के प्रचार–प्रसार की।

मुख्य शब्द : मानक हिन्दी, भाषा, अन्तराष्ट्रीय, व्याकरण, खड़ी बोली, हिन्दी, परिनिष्ठित, अमानक, सम्प्रेषण, शुद्ध, आदर्श, स्वर, व्यंजन, बोलियाँ, मातृभाषा, राष्ट्रभाषा आदि।

प्रस्तावना

हिन्दी भाषा के अनेक रूप प्रचलित हैं, जैसे– अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, बुन्देली, खड़ी बोली आदि। इन विभिन्न रूपों में शुद्ध रूप किसे माना जाये यह एक भम की स्थिति है। हिन्दी के इन विभिन्न रूपों के बीच कोई ऐसा रूप भी होना चाहिए, जो सर्वमान्य हो, जिसे विद्वत्जन तथा समस्त हिन्दी भाषी आसानी से समझ व प्रयोग कर सकें। ''हिन्दी का वह सर्वमान्य, सर्वस्वीकृत, सर्वप्रतिष्ठित रूप ही मानक हिन्दी भाषा है।''[1] भाषा के कइ रूप हो सकते हैं लेकिन 'मानक' रूप एक ही होता है। जो हमेशा एक जैसा होता है। अध्ययन–अध्यापन, भाषण, साहित्य तथा संस्कृति में सामान्यतः मानक भाषा का ही प्रयोग होता है।

उद्देश्य

हिन्दी के मानक रूप को दिखाना प्रस्तुत शोधालेख का मूल उद्देश्य है। हिन्दी भाषा में ढेरों गलत प्रयोग किये जा रहे हैं। अतः हिन्दी के शुद्धतम रूप को जानने की आवश्यकता है।

मानक भाषा का आशय

'मानक' का अभिप्राय है– आदर्श, श्रेष्ठ या परिनिष्ठित। भाषा का जो रूप; उस भाषा के प्रयोक्ताओं के अतिरिक्त अन्य भाषा–भाषियों के लिए आदर्श होगा, जिसके माध्यम से वे (अन्य भाषा–भाषी) उस भाषा को सीखेंगे, जिस भाषा रूप का व्यवहार पत्राचार, शिक्षा, सरकारी कामकाज एवं सामाजिक–सांस्कृतिक आदान–प्रदान में समान स्तर पर होगा, वह उस भाषा का 'मानक' रूप कहलायेगा।[2]

हिन्दी में 'मानक' शब्द का प्रचलन अंग्रेजी के स्टैंडर्ड (Standard) शब्द के पर्याय के रूप में हुआ है। अतः वह भाषा जो व्याकरण सम्मत, शुद्ध, परिनिष्ठित तथा परिमार्जित होती है, मानक भाषा कहलाती है। मानक भाषा को नागर भाषा, आदर्श भाषा, परिनिष्ठित भाषा, साधु भाषा आदि भी कहा गया है। अंग्रेजी में इसे 'Standard Language' की संज्ञा दी गई ह।

इस प्रकार ''मानक भाषा' किसी भाषा के उस रूप को कहते हैं, जो उस भाषा के पूरे क्षेत्र में शुद्ध माना जाता है तथा जिसे उस प्रदेश का शिक्षित और शिष्ट समाज अपनी भाषा का आदर्श रूप मानता है और प्रायः सभी औपचारिक स्थितियों में, लेखन में, प्रशासन और शिक्षा के माध्यम के रूप में, यथासाध्य उसी का प्रयोग करता है।''[3] भोलानाथ तिवारी के शब्दों में– ''किसी भाषा के मानक रूप का अर्थ है– उस भाषा का वह रूप जो उच्चारण, रूप–रचना, वाक्य रचना, शब्द और शब्द रचना, अर्थ, महावरे, लोकोक्तियाँ, प्रयोग तथा लेखन आदि की दृष्टि से उस भाषा के सभी नहीं तो अधिकांश सुशिक्षित लोगों द्वारा शुद्ध माना जाता है।''[4]

मानक हिन्दी भाषा

मानक भाषा के विस्तृत विवेचन से स्पष्ट होता है कि 'मानक हिन्दी भाषा' मूलतः हिन्दी का वह रूप है जो पूरी तरह से शुद्ध व परिमार्जित है, जो व्याकरण के नियमों में बद्ध है, जो एक शिक्षित वर्ग द्वारा लिखी, पढ़ी व बोली जाती है, जो सर्वमान्य तथा सर्वस्वीकृत है, परिनिष्ठित है, ऐसी हिन्दी भाषा को 'मानक हिन्दी भाषा' की संज्ञा दी जाती है। प्रो. गणेश दत्त त्रिपाठी क शब्दों में– ''मानक हिन्दी भाषा' का अर्थ हिन्दी भाषा के उस स्थिर रूप से है, जो अपने पूरे क्षेत्र में शब्दावली तथा व्याकरण की दृष्टि से समरूप है। इसलिए वह सभी लोगों द्वारा मान्य है, सभी लोगों द्वारा सरलता से समझी जा सकती है। मानक हिन्दी भाषा ही देश की शद्ध हिन्दी भाषा है। राजकाज की भाषा है, ज्ञान–विज्ञान, साहित्य संस्कृति की भाषा है। अधिकांश विद्वान, साहित्यकार, राजनेता औपचारिक अवसरों पर इसी भाषा का प्रयोग करते हैं।''[5] आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के प्रसारण में इसी भाषा का प्रयोग किया जाता है। व्याकरण तथा भाषा विज्ञान की दृष्टि से 'मानक हिन्दी भाषा' ही हिन्दी का शुद्धतम रूप है।

मानक हिन्दी भाषा की विशेषताएँ या लक्षण

मानक भाषा या मानक हिन्दी भाषा की विशेषताओं अथवा लक्षणों को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत रखा जा सकता है –

एकरूपता

हिन्दी भाषा की पस्तकों में हम एक ही शब्द को अलग–अलग रूपों में देखते है; जैसे– राजनीतिक, राजनैतिक, अंतःराष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय इत्यादि। यद्यपि इस प्रकार के शब्द किसी–न–किसी तर्क के आधार पर शुद्ध कहे जा सकते हैं। इस प्रकार के शब्दों को पढ़कर कोई अन्य भाषा–भाषो हिन्दी सीखते समय भ्रम में पड़ जाते हैं अतः ऐसे शब्दों के प्रयोग हेतु मानक हिन्दी का प्रयोग करना पड़ता है जो पूरी तरह शुद्ध होती है। तथा इस प्रकार के प्रयोग से हिन्दी शब्दों में एकरूपता बनी रहती है। जैसे कि आधुनिक भाषा शास्त्रियों के अनुसार उपर्युक्त शब्दों के 'राजनीतिक' एवं 'अन्तरराष्ट्रीय' रूप मानक हिन्दी के अन्तर्गत लिखे–पढ़े जा रहे हैं। मानक हिन्दी एक ही रूप को मान्यता देती है इससे एकरूपता भी बनी रहती है साथ ही उसकी सर्वमान्यता और शुद्धता पर आँच नहीं आती है।

व्याकरण सम्मत

मानक भाषा का व्याकरण–सम्मत होना अनिवार्य है। इस भाषा में व्याकरण के नियमों का पूर्णतः पालन किया जाता है। मानक भाषा मौखिक रूप के अतिरिक्त लिखित रूप में भी प्रयुक्त होती है। अतः दोनों रूपों को जीवित रखने हेतु मानक हिन्दी के प्रयोग के समय व्याकरण के नियमों का भली–भाँति पालन करना पड़ता है।

जैसे –

(क) क्या मोहन पुस्तक पढ़ता है।

(ख) अरे, वह पानी में डूब गयी।

उपर्युक्त दोनों वाक्य व्याकरणिक दृष्टि से अशुद्ध हैं तथा अमानक वाक्यों की कोटि में रखे जा सकते हैं। इन वाक्यों में विराम चिह्नों का सही प्रयोग नहीं हैं अतः इन्हें मानक हिन्दी मे व्याकरण की दृष्टि से विराम चिह्नों का सही प्रयोग करते हुए इस प्रकार रख सकते हैं –

(क) क्या मोहन पुस्तक पढ़ता है ?

(ख) अरे! वह पानी में डूब गयी।

इस तरह मानक (हिन्दी) भाषा व्याकरण सम्मत होती है।

पूर्ण शुद्धता

मानक भाषा पूर्ण रूप से शुद्ध भाषा मानी जातो है। क्योंकि यह व्याकरण रूपी छलनी से छनी होती है। इस दृष्टि से मानक हिन्दी भाषा पूर्णतः शुद्ध है। शुद्धता के कारण इस भाषा में व्यापक साहित्य सृजन हो रहा है। अध्ययन–अध्यापन में भी इस भाषा का प्रयोग लगातार बढ़ता जा रहा है। शुद्धता के कारण ही विविध क्षेत्रों के पठन–पाठन में इस भाषा को श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है।

सामाजिक मान्यता

मानक भाषा मानव समाज द्वारा मान्य होती है। साथ ही यह समाज के अधिकांश लोगों के द्वारा बोली जाती है। भारत देश में मानक हिन्दी बोलने एवं लिखने वालों की संख्या सर्वाधिक है अतः इसे सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त है। यह भाषा हमारे देश की राष्ट्रभाषा भी है अतः इसे सामाजिक मान्यता मिलना स्वाभाविक है।

सभ्य और सुसंस्कृत लोगों की भाषा

मानक भाषा सभ्य और सुसंस्कृत लोगों की भाषा होती है क्योंकि इस भाषा का प्रयोग अधिकांशतः यही लोग करते ह। यद्यपि असभ्य लोग भी मानक भाषा के शब्दों का प्रयोग बोलचाल में करते हैं लेकिन वे व्याकरण के नियमों से अपरिचित होने के कारण ठीक–ठीक प्रयोग नहीं कर पाते हैं। अतः मानक भाषा मूलतः सभ्य और सुसंस्कृत लोगों की भाषा है। विद्वानों, साहित्यकारों एवं शिक्षित समाज के लोगों द्वारा मानक हिन्दी का प्रयोग व्यापक रूप में हो रहा है।

प्रयोग बहुलता

मानक हिन्दी की मुख्य पहचान या विशेषता यह है कि उसके प्रयोक्ताओं की संख्या पर्याप्त होनी चाहिए। क्योंकि जब तक कोई भाषा सीमित वर्ग में ही प्रयुक्त होगी, वह मानक–रूप प्राप्त नहीं कर सकती। जिस भाषा को जितने अधिक लोग अपनी अभिव्यक्तियों का माध्यम बनायेंगे वह भाषा उतनी ही अधिक समृद्ध होगी। इस दृष्टि से मानक हिन्दी के प्रयोक्ताओं की संख्या सर्वाधिक है इसलिए यह भाषा विकसित हो सकी है तथा इसे आदर्श भाषा का दर्जा प्राप्त है।

सहजता या सुबोधता

प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ. भोलानाथ तिवारी के मतानुसार – ''मानक भाषा के स्तर तक वही भाषा पहुँच सकती है जो अधिकाधिक लोगों के लिए सहजतापूर्वक बोधगम्य हो। क्लिष्ट भाषा 'क्लासिकल' तो कहला सकती है, 'मानक' नहीं।''[6] हिन्दी, मानक भाषा अल्प समय में इसलिए बन सकी क्योंकि अधिकांश भारतीयों के द्वारा इसे समझना, अपनाना तथा अभिव्यक्ति प्रयोग हेतु ग्रहण करना सहज है। अवधी, ब्रज, भोजपुरी, बघेली भले ही हिन्दी की बोलियाँ हैं लेकिन समझने एवं सम्प्रेषण में लोग कठिनाई का अनुभव करते हैं किन्तु हिन्दी के मानक–रूप को समझना कठिन नहीं है।

केन्द्रोन्मुखता

मानक भाषा अपने क्षेत्र उसके आसपास की अन्य भाषाओं, उपभाषाओं, विभाषाओं और बोलियों का केन्द्र बिन्दु बन जाती है। सभी निकटवर्ती भाषाओं के शब्द, पद, अभिव्यक्ति प्रयोग एवं मुहावरों आदि को वह अपने में दूध–पानी के समान घुला–मिलाकर उनकी सम्प्रेषण–शक्ति अपने में केन्द्रित कर लेती है। हिन्दी की उपभाषाओं, विभाषाओं एवं बोलियों के प्रयोक्ता हिन्दी के केन्द्रीय रूप 'मानक हिन्दी' को भली–भाँति समझ सकते हैं।

मानक हिन्दी की आवश्यकता

मानक भाषा का प्रयोग सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक है। इस भाषा के माध्यम से जन समुदाय परस्पर सम्पर्क स्थापित करता है। यह भाषा सारे हिन्दी भाषी क्षेत्र को एकता के सूत्र में बाँधती है। इस भाषा के द्वारा ही हम आधुनिक शिक्षा का लाभ उठाते हैं। मानक हिन्दी के कारण आकाशवाणी और दूरदर्शन के प्रसारण का पूरा–पूरा लाभ लिया जाता है। साथ ही श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों की रचना हेतु मानक हिन्दी की आवश्यकता पड़ी। इस भाषा के द्वारा पारस्परिक बोधगम्यता भी संभव होती है। साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन–अध्यापन, लेखन एवं अभिव्यक्ति सम्प्रेषण हेतु मानक हिन्दी की आवश्यकता महसूस हुई।

मानक हिन्दी की संरचना के आयाम

मानक हिन्दी की संरचना के व्याकरणिक दृष्टि से निम्नलिखित चार आयाम हैं जो मानक हिन्दी के स्वरूप का निर्माण करते हैं।

1. ध्वनि
2. शब्द
3. पद
4. वाक्य

मानक हिन्दी में मूलतः दो प्रकार की ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है– स्वर तथा व्यंजन। स्वर स्वयं उच्चारित होते हैं तथा व्यंजन स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं। हिन्दी वर्णमाला में कुल 52 ध्वनियाँ हैं जिनका विस्तृत विवेचन अगले शीर्षक में 'मानक हिन्दी की ध्वनियों' के अन्तर्गत किया जायेगा।

'शब्द' मूलतः दो या दो से अधिक वर्णों का सार्थक समूह होता है। जो मानक हिन्दी का अभिन्न अंग है। **'पद'** दो या दो से अधिक शब्दों का सार्थक समूह माना जाता है। यह मानक हिन्दी का अपूर्ण वाक्य होता है। पद को 'शब्द–समूह' या उपवाक्य की संज्ञा भी दी जा सकती है। शब्दों के सार्थक समूह को 'वाक्य' कहते हैं। जिस प्रकार सार्थक शब्द समूहों से वाक्य की संरचना होती है उसी प्रकार सार्थक तथा व्याकरण सम्मत वाक्यों से मानक हिन्दी के व्यापक रूप की संरचना होती है। इस तरह ध्वनि, शब्द, पद तथा वाक्य मानक हिन्दी की संरचना के विभिन्न अंतरंग आयाम हैं जो कि मानक हिन्दी के स्वरूप निर्धारण में सहायक होते हैं।

मानक हिन्दी की ध्वनियों का स्वरूप

मानक हिन्दी की ध्वनियाँ मुख्यतः दो वर्गों में विभक्त हैं –

(क) स्वर

(ख) व्यंजन

स्वर

मानक हिन्दी में स्वर वे ध्वनियाँ मानी जातीं हैं जिनके उच्चारण में अन्य किसी वर्ण की आवश्यकता नहीं पड़ती है, अर्थात् स्वर मुख से अबाध गति से उच्चरित होने वाली ध्वनियाँ हैं। हिन्दी में स्वरों की संख्या 13 मानी गयी है। जिनका वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है

स्वर वर्णक्रम– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः (कुल –13)

वर्गीकरण – ह्रस्व स्वर – अ, इ, उ, ऋ
दीर्घ स्वर – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
अनुस्वार – अं
अनुनासिक – अँ, विसर्ग – अः

व्यंजन

मानक हिन्दी की वे ध्वनियाँ जो स्वरों की सहायता से बोली जाती हैं, व्यंजन कहलाती हैं। मानक हिन्दी में व्यंजन ध्वनियों की संख्या 39 है। ये ध्वनियाँ निम्नानुसार हैं –

	संयुक्त व्यंजन	**अरबी–फारसी**
क, ख, ग, घ, ङ.	क् + ष = क्ष	क़ ख़ ग़ ज़ फ़
च, छ, ज, झ, ञ	त् + र = त्र	
ट, ठ, ड, ढ, ण	ज् + ञ = ज्ञ	
त, थ, द, ध, न	श् + र = श्र	
प, फ, ब, भ, म		
य, र, ल, व		
श, ष, स, ह		
क्ष, त्र, ज्ञ		
श्र, ड़, ढ़		

उच्चारण स्थान

कण्ठ	–	क, ख, ग, घ, ङ.
तालव्य	–	च, छ, ज, झ, ञ, श
मूर्धन्य	–	ट, ठ, ड, ढ, ण, ष,
दन्त	–	त, थ, द, ध, न, स
ओष्ठ्य	–	प, फ, ब, भ, म
अंतःस्थ	–	य, र, ल, व
ऊष्म	–	श, ष, स, ह
नासिक्य	–	ङ., ञ, ण, न, अं, अँ

अमानक हिन्दी शब्दों के मानक हिन्दी रूप

हिन्दी में ऐसे शब्द प्रचलित हैं जिनका हम गलत प्रयोग करते हैं। ये गलत शब्द लम्बे समय तक प्रयोग करने पर प्रचलन में आ जाते हैं तथा लिखते–पढ़ते समय ये अमानक शब्द हमें मानक प्रतीत होते हैं तथा भ्रम की स्थिति निर्मित करते हैं। ऐसे अमानक शब्दों की सूची यहाँ दो जा रही है। अमानक शब्दों के समक्ष मानक हिन्दी शब्द भी नीचे दिये जा रहे हैं –

अमानक		**मानक**
अनुग्रहीत	–	अनुगृहीत
उज्जवल	–	उज्ज्वल
कवियत्री	–	कवयित्री
चिन्ह	–	चिह्न
तत्व	–	तत्त्व (तत्त्व)
दवाईयाँ	–	दवाइयाँ
पत्नि	–	पत्नी
प्रमाणिक	–	प्रामाणिक

महत्व	–	महत्त्व (महत्त्व)
श्रीमति	–	श्रीमती
स्थाई	–	स्थायी
पुरूस्कार	–	पुरस्कार
रूपया	–	रुपया
गुरू	–	गुरु
मूर्छा	–	मूर्च्छा
श्रृंगार	–	शृंगार
पूज्यनीय	–	पूजनीय
सम्मानीय	–	सम्माननीय
निरोग	–	नीरोग
स्थाई	–	स्थायी
षड़यंत्र	–	षड्यंत्र
सामर्थ	–	सामर्थ्य
पैत्रिक	–	पैतृक

मानक हिन्दी के उच्चारण की समस्याएँ (Problems)

मानक हिन्दी जितनी सरल है, प्रयोग की दृष्टि से उतनी ही कठिन है। आंचलिक क्षेत्रों में बोलियों के व्यापक प्रभाव के कारण आंचलिक (ग्रामीण) लोगों को मानक हिन्दी के प्रयोग में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। शिक्षित वर्ग को भी जिनकी मातृभाषा क्षेत्रीय बोलियाँ रही हैं उन बोलियों के उच्चारण के प्रभाव के कारण मानक हिन्दी के उच्चारण में समस्या आ रही है। कई बोलियाँ ऐसी हैं जिनमें मानक हिन्दी के वर्ण मौजूद नहीं है अतः ऐसी बोलियों के प्रयोक्ताओं द्वारा मानक हिन्दी के कुछ वर्णों के उच्चारण में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। उदाहरणार्थ– बुन्देली, ब्रज और अवधी बोलियों के प्रयोक्ताओं द्वारा मानक हिन्दी उच्चारण की कठिनाईयों को समझा जा सकता है –

बुन्देली		**मानक हिन्दी**
सेर	–	शेर
सक्कर	–	शक्कर
बन	–	वन
सिंगार	–	श्रृंगार
ब्रजभाषा		**मानक हिन्दी**
स्याम	–	श्याम
राजस्थानी		**मानक हिन्दी**
पाणी	–	पानी
बिहारी		**मानक हिन्दी**
लरका	–	लड़का
अवधी		**मानक हिन्दी**
अस्थान	–	स्थान

बुन्देली, ब्रज, अवधी, राजस्थानी, बिहारी भाषा के उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि इन भाषाओं में जिस प्रकार के वर्ण हैं। इन भाषाआ के प्रयोक्ता मानक हिन्दी में भी अपनी भाषा के समान उच्चारण करते हैं। अतः ऐसी भाषाओं के भाषा–भाषियों को मानक हिन्दी के उच्चारण में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ''हिन्दी के मानकीकरण में अनेक व्यवहारिक कठिनाईयाँ हैं। सच तो यह है किसी भी हिन्दी भाषी की मातृभाषा मानक हिन्दी नहीं है और प्रायः सभी हिन्दी भाषी द्विभाषिक हैं, फिर भी हिन्दी का मानक रूप है। जिसके ज्ञान के लिए उसके संरचनात्मक विधान और अशुद्धियों के विविध संदर्भों की जानकारी आवश्यक है।''[7]

उपसंहार

मानक हिन्दी मूलतः 'खड़ी बोली' है, जो कि बृहद् क्षेत्रों में बोली जाती है। यह भाषा भारत की राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा मानी जाती है। इसे भारत की सम्पर्क भाषा भी कहा गया है। 'मानक हिन्दी' समाज में, विधानसभा या संसद में, कक्षा या कार्यालय में, अदालत या साहित्यिक मंच पर प्रयुक्त होती है। इस प्रकार के उच्चस्तरीय प्रयोग के कारण मानक हिन्दी का विशिष्ट महत्त्व है। शैक्षणिक–साहित्यिक पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, सरकारी कागजों आदि में प्रयुक्त होने के कारण भी इस भाषा की महत्ता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। हालाँकि नगरों, महानगरों में अंगजो के व्यापक प्रयोग के कारण मानक हिन्दी का प्रभाव उच्च स्तर पर कम हुआ है, फिर भी यह भाषा (मानक हिन्दी) अपना स्थान बनाये हुए है अतः इसकी महत्ता स्वयं सिद्ध है।

सुझाव

मानक हिन्दी भाषा को अब अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिल चुकी है क्योंकि विदेशों में भी मानक हिन्दी का खूब प्रचार प्रसार तथा प्रयोग हो रहा है। अतः हिन्दी को विश्व भाषा की संज्ञा भी दी जाने लगी है। विश्व के सभी हिन्दी भाषा प्रेमियों हेतु मेरा सुझाव है कि हिन्दी भाषा के मानक रूप के प्रयोग को बढ़ावा दें, प्रचार–प्रसार करें तथा जो महत्व अंग्रेजी को मिला है वही महत्त्व हिन्दी को भी दिलायें। तभी हिन्दी को अपना वास्तविक स्थान प्राप्त होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्रिपाठी, प्रो. गणेश दत्त (1995), हिन्दी : रचना और प्रयोग, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, पृ. 4।
2. डॉ. रामप्रकाश, प्रयोजनमूलक हिन्दी : संरचना एवं अनुप्रयोग, पृ. 58।
3. त्रिपाठी, प्रो. गणेश दत्त (1995), हिन्दी : रचना और प्रयोग, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, पृ. 4।
4. तिवारी, भोलानाथ (1986), हिन्दी भाषा, किताब महल इलाहाबाद, पृ. 314।
5. वही पृ. 5।
6. डॉ. रामप्रकाश, प्रयोजनमूलक हिन्दी : संरचना एवं अनुप्रयोग, पृ. 60।
7. रुवाली, डॉ. केशवदत्त (1992), मानक हिन्दी ज्ञान, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा, पृ. 59।